بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **16.06.2017** मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

झूठ जैसी कोई मनहूस चीज़ नहीं

झूठ भी एक बुत है जिसपर भरोसा करने वाला ख़ुदा का भरोसा छोड़ देता है और झूठ बोलने से ख़ुदा भी हाथ से जाता है

पाक होने के लिए ज़रूरी है कि झूठ और हर प्रकार के शिर्क से इन्सान बचे

अहंकार शैतान से आया है तथा शैतान बना देता है

जब तक इन्सान इससे दूर न हो यह सत्य को क़बूल करने तथा अल्लाह की कृपा को प्राप्त करने के मार्ग में रोक हो जाता है

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

पिछले ख़ुत्बः में मैंने बताया था कि तक़्वा के लिए शिष्टाचार अनिवार्य हैं। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इरशाद है कि इन्सान मुत्तक़ी उस समय बनता है जब उसमें समस्त शिष्टाचार मौजूद हों। अतः मोमिन को यह प्रयास करना चाहिए कि समस्त शिष्टाचार को अपनाए तभी वे उच्च स्तरीय गुण उसमें पैदा हो सकते हैं जो एक मुत्तक़ी के लिए ज़रूरी हैं लेकिन कुछ विशेषताओं की बातें ऐसी हैं जो यदि एक मोमिन में नहीं तो फिर उसके ईमान के स्तर के विषय में शंका हो जाती है। इसमें से सबसे महत्त्व पूर्ण बात झूठ से बचना है। क़ुरआन-ए-करीम में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ

अतः तुम बुतों की गन्दगी से बचो और झूठ कहने से बचो। अतः बुतों की पूजा तथा झूठ को एकत्र करके स्पष्ट कर दिया कि यदि तुम्हारे अन्दर सच्चाई नहीं तथा सच्ची बात कहने की आदत नहीं तो यह ऐसा ही बड़ा पाप है जैसे बुतों को पूजना। यह सम्भव ही नहीं कि एक मोमिन को ख़ुदा तआला की वहदानियत (एक अकेला होने) पर भी ईमान हो और फिर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष गन्दी बातों में भी वह लिप्त हो।

अतः यह बहुत बड़ी और खुली और स्पष्ट चेतावनी है एक ईमान का दावा करने वाले को कि यदि मोमिन हो सच्चाई के उच्चतम स्तर भी अपनाने होंगे अन्यथा अपने ईमान की चिंता करो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बारे में बड़ा दुःख प्रकट किया है जो हर अहमदी को हर समय अपने सामने रखने की आवश्यकता है ताकि हम अपने ईमानों को मज़बूत करते हुए तक़्वा की ओर बढ़ने वाले हों। आप फ़रमाते हैं- क़ुरआन शरीफ़ ने झूठ बोलने को बुत पूजने के समान ठहराया है जैसे कि अल्लाह तआला फ़रमाता है فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ अर्थात- बुतों की गन्दगी और झूठ की गन्दगी से बचो, अर्थात झूठ भी एक

बुत है जिसपर भरोसा करने वाला ख़ुदा का भरोसा छोड़ देता है और झूठ बोलने से ख़ुदा भी हाथ से जाता है पाक होने के लिए ज़रूरी है कि झूठ और हर प्रकार के शिर्क से इन्सान बचे।

फ़रमाया- झूठ को बुत के समान रखा और वास्तव में झूठ भी एक बुत है अन्यथा क्यूँ सत्य को छोड़कर दूसरी ओर जाता है। झूठ बोलने वालों का विश्वास यहाँ तक कम हो जाता है कि यदि वे सच भी कहें तब भी यही लगता है कि इसमें भी कुछ झूठ की मिलावट न हो। यदि झूठ बोलने वाले चाहें कि हमारा झूठ कम हो जावे तो जल्दी से दूर नहीं होता। फ़रमाया कि लम्बे समय तक प्रयास करें तब जाकर उनको सच बोलने की आदत होगी।

आप फ़रमाते हैं कि जैसे मूर्ख इंसान अल्लाह तआला को छोड़कर पत्थर के सामने सिर को झुकाता है वैसे ही सत्य और सीधे मार्ग को छोड़कर झूठ को बुत बनाता है इससे बढ़कर और क्या दुर्भाग्य होगा कि झूठ पर अपने जीवन का आधार समझते हैं मगर मैं तुम्हें यक़ीन दिलाता हूँ कि अन्ततः सच ही कामयाब होता है, भलाई और विजय उसी की है। आप फ़रमाते हैं कि यक़ीनन याद रखो झूठ जैसी कोई मनहूस चीज़ नहीं। साधारणतः दुनयादार कहते हैं कि सच बोलने वाले पकड़े जाते हैं परन्तु मैं क्यूँ इस बात को मानूँ, मुझ पर सात मुक़दमे हुए और ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल से किसी एक में एक शब्द भी मुझे झूठ लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ी। अल्लाह तआला तो आप सच्चाई का समर्थक और सहायक है, यह हो सकता है कि वह सत्यवादी को दंड दे? यदि ऐसा हो तो फिर दुनया में कोई व्यक्ति सच बोलने का साहस न करे और ख़ुदा तआला पर सच्ची आस्था उठ जावे। सत्यवादी को ज़िन्दा ही मर जावें। फ़रमाते हैं- वास्तव में सच बोलने से जो सज़ा पाते हैं वह सच के कारण नहीं होती अपितु वह सज़ा उनकी कुछ अन्य गुप्त बदकारियों के कारण होती है। ख़ुदा तआला के पास तो उनकी बदियों और शरारतों का पूरा क्रम होता है उनकी अनेक ग़लतियाँ होती हैं और किसी न किसी में वे सज़ा पा लेते हैं। फ़रमाया कि निरन्तर नेकियों की आदत डालनी चाहिए तथा नेकियों पर स्थाईत्व प्राप्त होना चाहिए और जब इस्तिग़फ़ार करे इंसान और बुराईयों से बचने के लिए एहद करे तो फिर उस पर सदैव क़ायम रहने की कोशिश करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- दुनयादारों की तो यह हालत है कि हर मामले में छोटी से छोटी बात में भी झूठ बोलते हैं। अतः पिछले दिनों नैशनल ज्योगराफिक की पत्रिका आई, उसमें एक बड़ा निबन्ध था झूठ के बारे में और यह निष्कर्ष था कि हम क्यूँ झूठ बोलते हैं। उन्होंने जो सर्वे किया उससे पता चला कि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन तीन चार झूठ बोलता है तथा विभिन्न प्रकार के झूठ हैं। किसी का मार्गदर्शन करना है तो उचित प्रकार से नहीं किया उसमें भी झूठ बोला, धोखा देना है किसी को तो उसके लिए झूठ बोलते हैं। अपनी त्रूटियाँ छिपाने के लिए झूठ बोला जाता है। विशेष प्रभाव अपने बारे में देने के लिए झूठ बोला जाता है। आत्म अभिमान के लिए झूठ बोला जाता है। ये तो छोटे छोटे झूठ हैं, बड़े झूठों में उसने वर्णन किया कि पति और पत्नि अपने सम्बंधों के विषय में, जो उनके अन्य लोगों के साथ होते हैं उनको छिपाने के लिए झूठ बोलते हैं। जब पति और पत्नि की दोस्तियाँ अनुचित रूप ले लेती हैं स्वतंत्रता के कारण, उनके बारे में झूठ बोलना पड़ता है। फिर झूठ का जब पोल खुलता है तो फिर लड़ाईयाँ शुरु हो जाती हैं, फिर दूरियाँ और तलाक़ों तक नोबत पहुंचती है। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- हमारे यहाँ भी यदि आप निरीक्षण करें तो तलाक़ और ख़ुलाअ की नोबत इस लिए आती है कि झूठ का सहारा लिया जाता है जबकि इसी मूल मानसिकता को समझते हुए हमें निकाह के ख़ुत्बे में जिन आयात की तिलावत करने को कहा गया है उनमें यह आयत भी शामिल है कि يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝ अर्थात ऐ लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह का तक़्वा धारण करो और साफ़ और सीधी बात किया करो। और फिर आगे फ़रमाया يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۔ कि यदि तुम ऐसा करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे काम ठीक कर देगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा और

जो अल्लाह तआला और उसके रसूल का आज्ञापालन करे वह बड़ी सफलता प्राप्त करता है। फ़रमाया- जब स्वंतत्रता के नाम पर पर्दे नहीं रहते तो फिर सन्देह पैदा होते हैं और इस प्रकार फिर अविश्वास पैदा होता है फिर झूठ का सहारा लेना पड़ता है, एक क्रम चल पड़ता है जो समाप्त न होने वाली श्रंखला है।

फ़रमाया- अतः अल्लाह तआला ने पति पत्नि के सम्बंधों में इतनी अधिक सच्चाई की बात की है कि कोई ऐच पेच न हो। सच्चाई का उच्चतम स्तर हो तथा उसके द्वारा जहाँ तुम्हारे सम्बंध बने रहेंगे और तुम्हारे बच्चे भी अनेक समस्याओं से बचे रहेंगे। अल्लाह तआला तुम्हारे गुनाह भी माफ़ करेगा तथा बड़ी बड़ी सफलताएँ भी अता करेगा। अतः यह सुन्दर आदेश है इस्लाम का, लेकिन इसके बावजूद जो क़ौल-ए-सदीद से काम नहीं लेते उनसे अधिक दुर्भाग्य शाली और कौन हो सकता है।

अतः हमें अपनी सच्चाई के स्तरों को परखने की आवश्यकता है, उन पर नज़र रखने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला गवाहियों के बारे में फ़रमाता है कि झूठी गवाहियाँ न दो। अतः इबादुर्रहमान के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ और वे लोग झूठी गवाही नहीं देते। फ़रमाया- यदि हम चाहते हैं कि रहमान ख़ुदा के बन्दे बनें और ईमान में बढ़ें तो फिर झूठ से बचना होगा। हमारी सच्चाई का स्तर क्या होना चाहिए इस बारे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुझे इस समय उस उपदेश की आवश्यकता नहीं कि तुम हत्या न करो क्यूँकि बड़े घोर पापी के अतिरिक्त कौन अकारण ही किसी की हत्या की ओर बढ़ता है परन्तु मैं कहता हूँ कि अन्याय पर हठ करके सत्य की हत्या मत करो। सत्य को स्वीकार कर लो, चाहे एक बच्चे के द्वारा हो। सत्य पर ठहर जाओ और सच्ची गवाही दो, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ अर्थात- बुतों की गन्दगी से बचो तथा झूठ से भी कि वह बुत से कम नहीं। फ़रमाया कि जो चीज़ सत्य मार्ग से तुम्हारा मुंह फेरती है वही तुम्हारी राह में बुत है। सच्ची गवाही दो चाहे तुम्हारे बापों या भाईयों अथवा दोस्तों के विरुद्ध हो।

अल्लाह तआला फ़रमाता है- يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ۔ अर्थात- ऐ ईमान वालो, न्याय और सत्य पर क़ायम हो जाओ और सच्ची गवाहियों को अल्लाह के लिए अदा करो यद्यपि तुम्हारी जानों पर उसकी हानि पहुंचे अथवा तुम्हारे माँ बाप और तुम्हारे निकट सम्बंधी इन गवाहियों के कारण कष्ट में आवें। अतः यह स्तर है सत्य का, निःसन्देह यह न्याय का भी स्तर है परन्तु न्याय स्थापित नहीं होता उस समय तक, जब तक सच्चाई न हो। अतः ये स्तर हैं जो एक मोमिन के लिए अनिवार्य हैं। ख़ुदा तआला ने न्याय के बारे में, जो सच्चाई पर पूरा क़दम मारने के बिना प्राप्त नहीं हो सकता, फ़रमाया है कि وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا۔ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى۔ अर्थात दुश्मन क़ौमों की दुश्मनी तुम्हें न्याय करने में रुकावट न हो। फ़रमाया कि न्याय पर क़ायम रहो कि तक़्वा इसी में है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं सच सच कहता हूँ, फ़रमाते हैं- मैं सच सच कहता हूँ कि दुश्मन का स्वागत करना सरल है परन्तु दुश्मन के अधिकारों की सुरक्षा करना और मुक़दमों में न्याय और सत्य को हाथ से न जाने देना, यह बड़ा कठिन और बलवान पुरुषों का काम है। आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ने इस आयत में मुहब्बत का वर्णन नहीं किया बल्कि मुहब्बत के स्तर का वर्णन किाय है क्यूँकि जो व्यक्ति अपने जानी दुश्मन से न्याय करेगा तथा सच्चाई और न्याय से नहीं टलेगा, वही है जो सच्ची मुहब्बत भी करता है।

अतः एक मोमिन के सत्य का स्तर यह हो कि एक दुश्मन को भी, हानि पहुंचाने के लिए झूठ नहीं बोलना। जब दुश्मन के साथ ये स्तर होंगे सच्चाई के तो फिर आपस के सम्बंधों में सच्चाई के स्तर बढ़ने के कारण मुहब्बत के स्तर बढ़ेंगे और मुहब्बत में झूठ नहीं होता। अल्लाह तआला हम सबको इस बात को समझने की तौफ़ीक़ दे बल्कि सच्चाई से आगे बढ़कर क़ौल-ए-सदीद पर क़ायम होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

फ़रमाया- फिर एक महत्त्व पूर्ण नेकी जो मोमिन की प्रवृत्ति होनी चाहिए और अल्लाह तआला की निकटता प्रदान करती है, वह घमंड और अहंकार से दूरी है। अहंकार करने वाले लोगों के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ अर्थात- और घमन्ड से इंसानों के लिए अपने गालों को न फुलाओ और ज़मीन में यूँ ही अकड़ कर मत फिरा करो, अल्लाह तआला किसी अहंकारी तथा गर्व करने वाले को पसन्द नहीं करता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि याद रखो अहंकार शैतान से आया है और शैतान बना देता है। जब तक इंसान इससे दूर न हो यह सत्य को स्वीकार करने तथा अल्लाह तआला का कृपा पात्र होने में रोक हो जाता है। किसी प्रकार से भी अहंकार नहीं करना चाहिए, न ज्ञान की दृष्टि से, न धन की दृष्टि से, न प्रतिष्ठा की दृष्टि से, न ज़ात और ख़ानदान और परिवार के कारण, क्यूँकि अधिकांशतः इन्हीं बातों के कारण अहंकार पैदा होता है। जब इंसान इन घमन्डों से अपने आपको पाक साफ़ नहीं करेगा उस समय तक वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में पवित्र नहीं हो सकता। शैतान ने भी अहंकार किया था और आदम से अपने आपको अच्छा समझा, और कह दिया कि اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۖ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ फिर इसका परिणाम यह हुआ कि वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में पापी हो गया और आदम अपनी दुर्बलता को स्वीकार करने लगा और ख़ुदा तआला का कृपा पात्र हुआ। वे (आदम अलै.) जानते थे कि ख़ुदा तआला की कृपा के बिना कुछ नहीं हो सकता इस लिए दुआ की رَبَّنَا ظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا ۖ وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत को नसीहत फ़रमाई कि यह दुआ पढ़ते रहना चाहिए। आजकल रमज़ान के अन्तिम दशक से गुज़र रहे हैं। आग से बचने के लिए अल्लाह तआला का रहम प्राप्त करने के लिए इन दुआओं की बड़ी आवश्यकता है।

आप फ़रमाते हैं- सच्ची मअरिफ़त इसी का नाम है कि इंसान अपने नफ़्स को मसलूब (सूली पर)और ला शै (शून्य) समझे और आस्ताना-ए-उलवुहियत (अल्लाह की चौखट) पर गिर कर इन्कसार और इज्ज़ (विनय व नम्रता) के साथ ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल को तलब करे और उस नूर-ए-मअरिफ़त को मांगे जो जज़बात-ए-नफ़्स (दिल की विकृत भावनाओं)को जला देता है और अन्दर एक रोशनी और नेकियों की क़ुव्वत और हरारत (शक्ति और उष्मा) पैदा करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- वास्तव में यह गन्द जो आत्मा की भावुकता का है तथा अशिष्टता, घमंड और दिखावा इत्यादि अवस्थाओं में प्रकट होता है इस पर मौत नहीं आती जब तक अल्लाह तआला की कृपा न हो। यही कारण है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि क्या आप अपने कर्मों के कारण जन्नत में प्रवेश करेंगे तो यही फ़रमाया कि कदाचित नहीं, अपितु ख़ुदा तआला की दया से। फ़रमाया कि अम्बिया अलैहिस्सलाम कभी किसी शक्ति और सामर्थ्य को अपना व्यक्तिगत नहीं बताते, वे ख़ुदा से ही पाते हैं और उसी का नाम लेते हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः नबी जो अल्लाह तआला के विशेष बन्दे हैं उनका यह हाल है तो एक साधारण मनुष्य को कितनी विनम्रता दिखानी चाहिए और कितना अल्लाह तआला के फ़ज़्लों पर शुक्र अदा करते हुए और अधिक झुकते चले जाना चाहिए।

अल्लाह तआला हमें आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत और आपके बताए हुए तरीक़े पर चलते हुए समस्त बुराईयों से बचने तथा समस्त उच्च शिष्टाचारों को प्राप्त करने का सामर्थ्य प्रदान करे। हमारी सच्चाईयों के भी वे स्तर हों जो अल्लाह तआला की निकटता दिलाने वाले हों और हमारी विनम्रता के भी वे स्तर हों जो ख़ुदा तआला को पसन्द आएँ। हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के ऐसे व्यक्ति बनें जैसा कि वे हमें देखना चाहते हैं।

TOLL FREE NO; 180030102131